AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

eSfFkyh'kj.k xqIr ds ukVdksa dk egRo

'kks/k lkj

ORIGINAL ARTICLE

Author
M,- lat; dqekj flag
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय स्टेट बैंक
स्थानीय प्रधान कार्यालय
पटना, बिहार, भारत

हिंदी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त का नाम सर्वविदित है। गुप्त जी का उदय हिंदी साहित्य में ऐसे समय में हुआ जब हिंदी ब्रजभाषा को छोड़ खड़ीबोली अपना रही थी। हिंदी साहित्य में पद्य के समानांतर गद्य को भी महत्व मिल रहा था। वास्तविकता यह है कि हिंदी गद्य साहित्य का यह पल्लवन काल था, विकासकाल था। साहित्य किसानों से, मजदूरों से, गांवों से, आम जनता से जुड़ रहा था। साहित्यिक कमान आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसी शख्सियत के हाथो में थी। ''सरस्वती'' पत्रिका लेखकों एवं कवियों के लिए सर्वाधिक प्रतिष्ठित मंच थी। गुप्त जी भी अपनी रचनाओं के साथ ''सरस्वती'' में छपने का सम्मान पाते थे। कवि गुप्त ने नाटकों की भी रचानाएँ की हैं। इस तथ्य को व्यापक प्रसिद्धि नहीं मिली। सच तो यह है कि गुप्त जी के विराट कवि व्यक्तित्व के सामने उनका नाट्य व्यक्तित्व प्रस्फुटित तो हुआ परंतु पल्लवित नहीं हो सका। समसामयिक समस्याओं को उजागर करने के लिए उन्होंने पाँच मौलिक नाटक लिखे : अनघ, चंद्रहास, तिलोत्तमा, निष्क्रिय प्रतिरोध और विसर्जन। साथ ही महाकवि भास के अनेक संस्कृत नाटकों का भी उन्होंने हिंदी में अनुवाद किया। इससे सिद्ध होता है कि गुप्त जी में नाटक लिखने की प्रतिभा तो थी परंतु दृष्टि उतनी व्यापक नहीं थी जो उन्हें नाटककारों की श्रेणी में खड़ा कर सकती थी। इस शोध पत्र में गुप्त जी के नाट्य कौशल की संक्षेप में विवेचना की जायेगी।

eq[; 'kCn

eSFkyh'kj.k xqIr] ukVd] x|A

प्रस्तुत शोध पत्र राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की नाट्य–रचनाओं पर केन्द्रित है। गुप्त जी हिंदी के अत्यंत महत्वपूर्ण और समर्थ जातीय कवि हैं। गुप्त जी की कविता नवोत्थान की कविता है और उसमें भारतीय संस्कृति की गरिमामयी झाँकी की जीवंत प्रस्तुति हुई है। गुप्त जी का कवि व्यक्तित्व इतना व्यापक है कि उनकी काव्येतर रचनाएँ इसमें विलीन–सी हो गई हैं। गुप्त जी द्विवेदी–युग के सबसे बड़े रचनाकार हैं। द्विवेदी–युग गद्य के परिष्कार का युग भी है इसलिए यह स्वाभाविक है कि गुप्त जी ने गद्य में भी रचनाएँ की हों। द्विवेदी–युग के पहले भारतेन्दु–युग में कविता के साथ नाटक को भी केंद्रीय महत्व मिला था। द्विवेदी–युग में नाटक को पर्याप्त महत्व नहीं मिला किन्तु स्वयं द्विवेदी जी ने नाटक पर लिखा और इस विधा की महत्ता घोषित की। अतः उनके सुयोग्य शिष्य मैथिलीशरण गुप्त ने नाट्य रचनाएँ भी की।

मैथिलीशरण गुप्त का रचना–संसार अत्यंत व्यापक है। 1904 से 1964 यानी साठ वर्षों में उन्होंने सौ से

अधिक रचनाएँ दीं‌ए यथा – प्रबंध काव्य (महाकाव्य अथवा वृहद प्रबंध काव्य), खण्ड काव्यए फुटकर कविताएँ आदि। अपनी काव्य रचनाओं के लिए ही गुप्त जी राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित हुए।

गुप्त जी के नाटकों में सम्मिलित हैंः

¼d½ i|&ukVî vFkok :id

1. अनघ (प्रकाशन सन् 1925) बौद्ध संस्कृति पर आधारित नाट्य रूपक।
2. दिवोदास (प्रकाशन सन् 1950) दिवोदास के वैदिक आख्यान पर आधृत एकांकी नाट्य रूपक।
3. पृथ्वीपुत्र (प्रकाशन सन् 1950) माता भूमि के मिथक पर आधृत एकांकी संवाद रूपक।
4. जाँयनी (प्रकाशन सन् 1950) मार्क्स एवं जेनी (जयिनी) के जीवनादर्शों पर आधृत संवादात्मक काव्य।
5. लीला (प्रकाशन सन् 1960) नौ दृश्यों में विभाजित सीता–स्वयंवर की कथा (रचना काल सन् 1910)।

¼[k½ x| ukVd

1. तिलोत्तमा (प्रकाशन सन् 1915) पौराणिक आख्यान पर आश्रित नाटक, सुंद एवं उपसुंद के पराजय की कथा।
2. चंद्रहास (प्रकाशन सन् 1916) पाँच अंकों में विभाजित पौराणिक नाटक।
3. उद्धार (अप्रकाशित, रचनाकाल 1914) चितौड़–उद्धार की घटना पर आधारित नाटक।
4. विसर्जन (अप्रकाशित उनकी मृत्यु के उपरांत संकलित नाटकों में चिरगांव से प्रकाशित)।
5. निष्क्रिय प्रतिरोध (अप्रकाशित संकलित नाटकों में चिरगांव से प्रकाशित)।

vu|okn

¼d½ lL—r l

1. स्वप्न वासवदत्ता (प्रकाशन सन् 1914) महाकवि भास के नाटक का अनुवाद।
2. गीतामृत (प्रकाशन सन् 1925) भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का अनुवाद।
3. दूत घटोत्कच (प्रकाशन सन् 1955) भास के प्रसिद्ध एकांकी का अनुवाद।
4. अविमारक (प्रकाशन सन् 1963) भास के नाटक का अनुवाद।
5. प्रतिभा (प्रकाशन सन् 1963) भास के नाटक का अनुवाद।
6. अभिषेक (प्रकाशन सन् 1963) भास के नाटक का अनुवाद।
7. उरुभंग (अप्रकाशित, रचनाकाल सन् 1914) भास द्वारा रचित नाटक का अनुवाद।
8. दूत वाकयम (अप्रकाशित, रचनाकाल सन् 1914)।
9. चारुदत्त (अप्रकाशित, रचनाकाल सन 1914)।

¼x½ cxyk l vufnr

1. विरहिणी ब्रजांगना (प्रकाशन सन् 1914) माइकेल मधुसूदनदत्त द्वारा रचित वियोग–गीति का अनुवाद।
2. पलासी का युद्ध (प्रकाशन सन् 1914) नवीनचन्द्र सेन के प्रबंध दृकाव्य का अनुवाद।
3. वीरांगना (प्रकाशन सन् 1927) माइकेल मधुसूदनदत्त रचित ग्यारह पौराणिक पत्र, गीतों का अनुवाद।

इस प्रकार मौलिक रचनाओं के साथ–साथ गुप्त जी ने अनुवाद कार्य भी प्रचूर किया है, जिसमें नाटकों के अनुवाद भी शामिल हैं। गुप्त जी के नाटकों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि नाट्य तत्वों की कसौटी नाटककार का उद्देश्य नहीं था बल्कि नाटक के कलेवर में अपना संदेश, अपनी बात, अपना कथ्य पाठकों तक संप्रेषित करना था। साहित्य की सभी विधाओं में नाटक को सर्वाधिक रमणीय माना गया है। कहा भी गया है 'काव्येशु नाटकम रम्यमए तत्र रम्या शकुंतला.......।' नाटक को दृश्य काव्य इसीलिए कहा गया है क्योंकि जो पढ़ नहीं सकते या जो

पाठक की श्रेणी में नहीं आते..... वैसे व्यक्ति भी नाटक देखकर रसास्वादन अवश्य करते हैं। नाटक वह माध्यम है जिससे पाठक या दर्शक तक सहजता से कथ्य पहुंचाया जा सकता है। यही कारण है कि गुप्त जी एक सफल और स्थापित कवि होने के बावजूद नाटक भी लिखे। इस तथ्य को हम इस प्रकार से भी समझ सकते हैं कि काव्य पर चर्चा की बात आती है तो हमारा ध्यान आदि चर्चा पर जाता है और हमें संस्कृताचार्यों के सिद्धान्त दिख पड़ते हैं। संस्कृताचार्यों में प्रथम चर्चा आचार्य भरत मुनि की होती है। भरत मुनि का ''नाट्यशास्त्र'' वह ग्रंथ है जहां से काव्यशास्त्र की विवेचना उद्‌भूत होती है। तात्पर्य यह है कि काव्य या काव्यांग पर अलग से भरत मुनि ने कुछ न कहकर नाट्य के संबंध में ही कहा है जो काव्य पर भी लागू होता है। स्पष्ट है कि नाट्य और काव्य में सीधा फर्क यदि है तो वह दर्शी और श्रव्य का है। अतः नाटक की प्रभावशीलता को देखते हुए अनेक कवियों ने नाटक की रचनाएँ कीं, कुछ सफल नाटककार भी कहलाए और कुछ ऐसे भी हुए जिन्हें नाटककार के रूप में प्रसिद्धि नहीं मिली। कवि गुप्त जी ऐसे ही नाटककारों में से थे। उनके मौलिक नाटकों में ''अनघ'' बौद्ध कथाओं पर आधारित है। इसमें गांधीवादी हल तलाशने का प्रयास किया गया है। साथ ही सामाजिक सुधार पर भी बल है। इस नाटक के पात्र सामाजिक उत्थान के लिए तत्पर दिखाई पड़ते हैं। गुप्त जी के दूसरे नाटक ''चंद्रहास'' में नियति के महत्व को दर्शाया गया है। संदेश यह है कि सत कर्म करने पर नियति साथ देती है और हर संकट से व्यक्ति बच निकलता है यदि नियति अनुकूल हो। उनके तीसरे नाटक ''तिलोत्तमा'' में अनेक गूढ़ संदेश छिपा हुआ है। यदि आपस में फूट हो तो प्रतिद्वंद्वी की विजय सुनिश्चित हो जाती है। हम कितने भी ताकतवर क्यों न हों, यदि दूरदर्शिता नहीं रखते हैं और आपस में ही वर्चस्व की लड़ाई में अपने को झोंकते रहते हैं, तो नाश तय है। अंग्रेजों की भी यही कूटनीति थीः फूट डालो और राज करो। इस प्रकार दैवी शक्ति से उत्पन्न की गई परी तिलोत्तमा इस नाटक की नायिका है, नाटक का कथानक भले ही पौराणिक है परंतु उसमें निहित संदेश शाश्वत है। गुप्त जी के चौथे नाटक विसर्जन में ह्रदय परिवर्तन की बात की गई है। डाकुओं के दल द्वारा ज्ञानियों के संपर्क में आने पर ह्रदय परिवर्तन होता है और अंततः वे डाकजनी कार्य छोड देते हैं। अपने कुकृत्य पेशे का विसर्जन कर देते हैं। उनका पांचवा मौलिक नाटक है ''निष्क्रिय प्रतिरोध''। यह नाटक दक्षिण अफ्रीका की घटनाओं पर आधारित है। वह ऐतिहासिक घटना जहां भारतीय मजदूरों पर अत्याचार किए जाते थे, उन्हें सताया जाता थाए उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता था। ऐसे व्यवहार के विरुद्ध प्रतिरोध तो होता है, परंतु वह निष्क्रिय ही रहता है। कोई मजदूर का नेता ईंट का जवाब पत्थर से देने के लिए सामने नहीं आता। इसे यूं कह लें कि असंगठित मजदूरों के समूह का नेतृत्व विहीन रहना ही उनकी दयनीय स्थिति का कारण था। इस नाटक में गांधी का नाम कहीं नहीं लिया गया है परंतु सर्वत्र गांधीवादी प्रभाव दिखता है। धरातल पर इस नाटक का यह प्रभाव होता है कि गांधी जी के नेतृत्व में मार्च संपादित होता है, आंदोलन को एक धार मिलता है, प्रतिरोध की आवाज सुनाई पड़ने लगती है।

मैथिलीशरण गुप्त सही अर्थों में अतीत के हंस हैं। अतीत को उन्होंने एक प्रेरणा के रूप में, एक आदर्श के रूप में और एक जागृति के रूप में प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय का यह मत द्रष्टव्य है– ''अपने चुने अतीत में प्रासंगिकता का समावेश तो गुप्त जी की सामान्य विशेषता है ही, लेकिन उन्होंने कुछ ऐतिहासिक रचनाएँ युगीन परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर ही लिखी हैं। नारी को गौरव देनेवाली कृतियों के अतिरिक्त तत्कालीन राष्ट्रीय समस्याओं ने उन्हें ''काबा और कर्बला'', ''गुरुकुल'' आदि रचनाओं के लिए प्रेरित किया। यदि हम इन रचनाओं का प्रकाशन काल देखें तो स्पष्ट हो जाएगा कि देश में सांप्रदायिकता और विघटन के ऐसे अवसर उपस्थित हो गए थे, जिसमें भावनात्मक वाक्य के लिए अल्प संख्यकों के धर्मों, विश्वासों और महापुरुषों के प्रति सम्मान और स्नेह प्रकट करना अनिवार्य था। उक्त वाक्यों में गुप्त जी ने इसी कवि–कर्तव्य का पालन किया है। वे ''गुरुकुल'' (1929) में कई जगह हिंदुओं और सिक्खों की अभिन्नता की चर्चा करते हैं और पुरुषों के चरित्र तथा ऐतिहासिकता से उसे प्रमाणित भी करते हैं, क्योंकि कुछ सिक्खों द्वारा सिक्ख समाज को हिंदुओं से पृथक करने की कोशिशें की जा रही थी। ''काबा और कर्बला'' का लेखन कार्य (1943) भारत में हिन्दू–मुस्लिम दंगों का काल है। इसके द्वारा गुप्त जी ने न केवल मुस्लिम धर्म के उच्च मूल्यों का उदघाटन किया है, वरन् अन्य जातियों और धर्मों के साथ उनके तादात्म्य की जरूरत भी प्राकारांतर से प्रतिपादित की है।''

मैथिलीशरण गुप्त की सम्पूर्ण रचनाएँ भारतीयता की खोज की रचनात्मक चेष्टाएँ हैं। प्रसिद्ध कवि–चिंतक अज्ञेय के शब्दों में– ''मैथिलीशरण गुप्त उस युग के प्रतीक.पुरुष थे, जिसका एक प्रमुख लक्षण था। एक भारतीय अस्मिता की खोज की व्याकुलता। यह व्याकुलता राष्ट्रीयता का या राष्ट्र–मुक्ति के संग्राम का केवल परिणाम नहीं थीं, बल्कि उसका कारण भी थी। ऐसे भी लोग थे जो अँग्रेजी राज को हटा देना उतना जरूरी नहीं मानते थे, पर भारतीयता की प्रतिष्ठा के लिए फिर भी व्याकुल थे। दो समानान्तर स्रोत थे, जिनसे दो प्रकार की स्वाधीनता की धाराएँ उमड़ रही थीं और एक–दूसरे को बल दे रही थीं। राजनीतिक स्वाधीनता का आग्रह राष्ट्र की पश्चिमी अवधारणाओं से और पश्चिम के अनेक देशों में होने वाले स्वाधीनता आंदोलनों से प्रेरणा ले रहा था। सांस्कृतिक स्वायत्तता और आत्म–निर्भरता की छटपटाहट इस देश की मिट्टी में अपनी जड़ें पहचानने और उन्हें सींचने का आयोजन कर रही थी।''

मैथिलीशरण गुप्त अपना कथ्य परंपरा से प्राप्त करते हैं और पौराणिक काल के अतिरिक्त उन्होंने भारतीय इतिहास के कई महत्वपूर्ण क्षणों को अपने काव्य के माध्यम से रूपायित किया है, पर उनका एक वैशिष्ट्य यह है कि आधुनिक भारतीय समाज उन्हें आंदोलित करता है और वह उसके कई ऐतिहासिक मोड़ों पर स्वयं को उपस्थित पाते हैं। इस दृष्टि से उनकी रचनाएँ समय के साथ अग्रसर होती रही हैं और उनकी एक विकास यात्रा है। तात्कालिक परिस्थितियों का प्रभाव उनके काव्य संसार में देखा जा सकता है। उन्होंने ''किसान'' जैसी कविता लिखी, जिसमें फीजो द्वीप के गिरमिटिया मजदूरों का वर्णन है। साम्राज्यवादी ब्रिटिश सत्ता अपने पूंजीवादी मंसूबों को मजबूत करने के लिए भारत से सस्ते मजदूर बाहर से जाती थी और उनका हर प्रकार का शोषण करती थी। कवि ने इस मजदूर वर्ग को अपनी सहानुभूति दी है। ''विश्व वेदना'' में वे विश्वयुद्ध का विरोध करते हुए कहते हैं कि भीषण विनाश रुकना चाहिए और मानवता की रक्षा हर मूल्य पर की जानी चाहिए। ''भूमिभाग'' की प्रेरणा संत विनोबा भावे का भूदान आंदोलन है। भारत सामंती शोषण में जकड़ा है इसलिए उसकी प्रभृति में बाधाएँ हैं, काश्तकार को उसका अधिकार मिलना ही चाहिए। ''राजा–प्रजा'' की प्रेरणा भारतीय लोकतन्त्र है, आजादी के बाद का भारत। ''पृथ्वी पुत्र'' आज के यान्त्रिकी पूंजीवादी–भौतिकवादी समाज का प्रतीक है।

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएँ भारतीयता का अभिज्ञान हैं। उनमें अतीत के प्रति श्रद्धा, वर्तमान के प्रति चिंता और भविष्य के प्रति आशा के भाव हैं। काव्य गुप्त जी की प्रतिनिधि विधा है किन्तु लोक–जीवन को समग्रता से अनुप्राणित करने के लिए उन्होंने नाटक को अपना रचनात्मक माध्यम बनाया है। उन्होंने पाँच मौलिक नाटक लिखे हैं और संस्कृत के ज्ञात प्राचीनतम नाटककार भास के चार नाटकों का अनुवाद किया है। गुप्त जी के इन नाटकों के अध्ययन से उनके रचनात्मक वैविध्य को रेखांकित किया जा सकता है।

fu"d"k

गुप्त जी ने दो महाकाव्यों एवं उन्नीस खंडकाव्यों की रचना की है। प्रबंध काव्यों की गति–योजना में संवादों की विशेष भूमिका होती है। संवादों में नाटकीयता के विनियोग से कथा प्रवाह रोचक बनता है। अतः गुप्त जी के प्रबंध काव्यों की शिल्पविधि पर उनकी नाटकीय दृष्टि का प्रभाव भी खोजा जा सकता है।

दृष्टि के बिना सृष्टि असंभव है। प्रत्येक विधा की कुछ अपनी विशेषताएँ होती हैं। विधा मात्र रूप की ही नहीं, कथ्य की अलग भंगिमा की वाहिका भी होती है। अतः शास्त्रीयता के निष्कर्ष पर गुप्त जी की नाट्य दृष्टि में हमें भारतीय नाट्य परंपरा के दर्शन होते हैं। गुप्त जी के नाटक कथा, स्रोत की दृष्टि से पौराणिक भी हैं, ऐतिहासिक भी हैं और समसामयिक जीवन के यथार्थ पर भी केन्द्रित हैं। गुप्त जी के पास मूल रूप से काव्य–दृष्टि थी, जिसका विनियोग उन्होंने अपनी नाट्य–रचनाओं में भी किया है। कविताओं की ही तरह गुप्त जी के नाटक मनोरंजन के साधन मात्र नहीं हैं। वे अपने देश–काल से सीधे संवाद के लिए रचनात्मक पहल करते प्रतीत होते हैं। ऐतिहासिक और पौराणिक होने के बावजूद गुप्त जी की दृष्टि नवीन है और वे अतीत के माध्यम से अपने वर्तमान को जागृत करना चाहते हैं। यही नाटक के क्षेत्र में उनका वैशिष्ट्य भी है।

गुप्त जी के नाटक अपने शिल्प के कारण नहीं, अपने कथ्य के कारण ही उल्लेखनीय हैं। गुप्त जी का सांस्कृतिक स्वर उनकी राष्ट्रीयता और उनका हिन्दू–बोध सब उनके नाटक में प्रत्यक्ष हो उठे हैं। गुप्त जी के काव्य पर, उनकी प्रवृत्तियों पर बहुसंख्यक शोधकार्य हुए हैं। उनके नाटकों पर शोधार्थियों का ध्यान नहीं के बराबर गया है। गुप्त जी के कृतित्व के इस गौण पक्ष की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

lanHkZ lwph

1. डॉ नगेन्द्र, *मैथिलीशरण गुप्त काव्य संदर्भ कोष*।
2. गुप्त मैथिलीशरण, *अतीत के हंस*।
3. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त।
4. मैथिलीशरण गुप्त के नाटक (प्रकाशक, साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी)।

––==00==––